करनाल भास्कर
गुरुवार 29 दिसंबर, 2016 पौष, कृष्ण पक्ष-अमावस्या, 2073

कार्यक्रम किसानों के सशक्तिकरण के लिए चयनित तकनीकी विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

'देश में 6.73 मिलियन हेक्टेयर भूमि लवण ग्रस्त'

भास्कर न्यूज | करनाल

राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान में सीएसएसआरआई की ओर से फार्मर फस्ट परियोजना के अंतर्गत लवण ग्रस्त मैदानी क्षेत्रों के किसानों के सशक्तिकरण हेतु चयनित तकनीकियों विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें कैथल जिले के मुंदड़ी, ग्योग, सांपली खेड़ी, कत्थवाड़ तथा भैणी माजरा नामक गांवों के 30 किसानों ने भाग लिया। जिन्हें डेयरी फार्मिंग में वैज्ञानिक तौर तरीकों के समावेश के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की गई।

भूमि संबंधी जानकारी दी

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन एनडीआरआई के संयुक्त निदेशक डॉ. आरआरबी सिंह ने किया। डॉ. आरआरबी सिंह ने किसानों को बताया कि घटती जोत और बढ़ती जनसंख्या की वजह से देश में कुल 140 मिलियन भूमि पर कृषि की जाती है। इसमें 6.73 मिलियन हेक्टेयर भूमि लवण ग्रस्त है। उन्होंने बताया कि हरियाणा में लगभग दो तिहाई भूमिगत पानी निम्न गुणवता का है, जिसे लगातार सिंचाई करने से जहां पैदावार तो कम होती ही है, साथ में जमीन पर भी प्रतिकूल असर पड़ रहा है। उन्होंने आशंका जताई कि आने वाले समय में सिंचाई के लिए पानी 10 से 12 प्रतिशत कम हो जाएगा। इसलिए हमें जमीन की तासिर को समझते हुए उसमें सुधार करने की जरूरत है। उन्होंने किसानों को नसीहत देते हुए कहा कि साल्ट टोलरेंट किस्म को महत्व देना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी किसानों अपनी मिट्टी तथा पानी की जांच करवानी चाहिए और सोयल हैल्थ कार्ड बनवाने चाहिए।

करनाल. चयनित तकनीकियां विषय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में पहुंचे डा. पीएस ओबराय सहित अन्य वैज्ञानिक ।

पांच गांवों का किया चयन

डॉ. पशु स्वामी ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में दुधारू पशुओं में प्रजनन समस्याएं एवं उनका समाधान, जमीन के अनुसार फसल लगाना, चारा संरक्षण की तकनीकियों तथा कृषि के क्षेत्र में आ रही समस्याओं पर विचार विमर्श किया जाएगा। सीएसएसआरआई से डा. प्रवेंद्र श्योराण ने बताया कि फार्मर फस्ट परियोजना के तहत उन्होंने कैथल जिले के लवण ग्रस्त पांच गांवों का चयन किया है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसानों को आधुनिक टेक्नोलॉजी के बारे में बताया जाएगा। इस अवसर पर डॉ. पीएस ओबराय सहित अन्य वैज्ञानिक मौजूद रहे।

मौसम

	दिन	रात
करनाल	21.4	7.8
जींद	20.2	5.8
पानीपत	20.0	8.6

करनाल भास्कर

पानीपत, शुक्रवार 30 दिसंबर, 2016 पौष, शुक्ल पक्ष-प्रतिपदा, 2073

हरियाणा

घरौंडा > असंध > इंद्री > तरावड़ी > नीलोखेड़ी > निसिंग

कार्यक्रम | एनडीआरआई में आयोजित जय किसान-जय विज्ञान सप्ताह का समापन

नए साल से ऑनलाइन होगी खाद की बिक्री

भास्कर न्यूज | करनाल

एनडीआरआई में 23 से 29 दिसंबर तक जय किसान जय विज्ञान सप्ताह का आयोजन किया गया। कृषि विज्ञान केंद्र में समापन समारोह में जिला के सभी ब्लॉक के 130 से भी अधिक प्राइमरी कृषि सहकारी समितियों पैक्स के सदस्यों, किसानों विक्रेताओं ने भाग लिया।

उक्त कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए केवीके अध्यक्ष डॉ. दलीप गोसांई ने कहा कि विभिन्न प्रकार की खादों के साथ-साथ किसानों को आवश्यकतानुसार नवीनतम ज्ञान-विज्ञान और संबंधित कौशलता को भी प्रदान करने में तत्पर रहे क्योंकि आप जिला के कई हजार किसान परिवारों से जुड़े हुए हैं। डॉ. गोसांई ने कहा कि कृभको द्वारा एक जनवरी, 2017 से किसान को सीधे लाभ कार्यक्रम के चलते अनुदान राशि को पोस मशीन के माध्यम से खाद की बिक्री शुरू होने पर सभी पैक्स विक्रेताओं को पोस मशीन वितरित की। उन्होंने कुलदीप सिंह, प्रधान पैक्स यूनियन को पोस मशीन देकर वितरण का शुभारंभ किया।

आधार कार्ड से किसानों को खाद्य वितरण प्रणाली से जोड़ा जाएगा

मुख्य राज्य प्रबंधक कृभको हरियाणा संत कुमार ने पैक्स से सभी किसानों को संबोधित करते हुए कृभको की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी और बताया कि आने वाले समय में जो अनुदान पर खाद बिक्री किया जाएगा वह इस पोस मशीन से बिक्री होगा जिसकी अनुदान राशि सीधा किसान को मिलेगी। वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक बीएस राणा ने कहा कि जल्द ही आधार कार्ड से किसानों को इस खाद वितरण प्रणाली से जोड़ा जाएगा। इस अवसर पर जेएस राणा, बलबीर सिंह, जगीर सिंह, कबूल सिंह, जीवन सिंह, अजब सिंह, रोहताश सिंह, दलेल सिंह, पृथ्वी सिंह, राजेंद्र सिंह, रामपाल सिंह, केदार सिंह व अन्य उपस्थित थे।

करनाल. प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन पर किसानों को प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र वितरित करते हुए मुख्य अतिथि। फोटो | भास्कर

बहुधंधी कृषि मॉडल अपनाएं किसानः गुरबचन

भास्कर न्यूज | करनाल

केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान में डेयरी उत्पादन में वैज्ञानिक तौर-तरीकों का समावेश विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन हुआ। भारत सरकार की फार्मर फर्स्ट परियोजना के अंतर्गत लवणग्रस्त मैदानी क्षेत्रों के किसानों के लिए डेयरी उत्पादन में वैज्ञानिक तौर-तरीकों का समावेश विषय पर हुए कार्यक्रम में कैथल जिले के मुंदड़ी, कठवाड़, ग्योंग, सांपली खेड़ी तथा भैणी माजरा गांवों के 30 किसानों ने भाग लिया। इन किसानों को राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल तथा सीएसएसआरआई के विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा 14 व्याख्यान तथा विभिन्न प्रयोगात्मक प्रशिक्षण दिए गए।

संस्थान की किस्मों का उपयोग करें किसान

संस्थान के निदेशक डॉ. प्रबोध चंद्र शर्मा ने कहा कि वे लवणग्रस्त मृदाओं में अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए संस्थान द्वारा विकसित धान, गेहूं, सरसों व चना की प्रजातियों को उपयोग करें, क्योंकि ये प्रजातियां खराब जमीन व खराब पानी में भी अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक उत्पादन देती हैं।

पांच गांवों में टीमें कर रही कार्य

प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. प्रवेंद्र श्योराण ने बताया कि संस्थान के वैज्ञानिक 5 गांवों में टीम बनाकर कार्य कर रहे हैं ताकि किसानों की पानी, मृदा व पशुपालन की समस्याओं का हल निकाला जा सके। उन्होंने कहा कि इन गांवों से 50 मिट्टी व पानी के नमूने लिये गए हैं और इनको टैस्ट करके मृदा स्वास्थ्य कार्ड बनवाकर किसानों को शीघ्र भिजवाए जाएंगे। प्रभागाध्यक्ष डॉ. रंजय कुमार सिंह ने मंच संचालन किया।

चारा और खाद प्रयोग करने की सलाहः

मुख्य अतिथि डॉ. गुरबचन सिंह, अध्यक्ष, कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल, नई दिल्ली ने किसानों से कहा कि वे 5 एकड़ या इससे कम जमीन में आमदनी बढ़ाने के लिए संस्थान में विकसित बहुधंधी कृषि मॉडल का उपयोग करें। इस मॉडल में गेहूं, धान की फसल के साथ डेयरी, मुर्गीपालन, फल, सब्जी, मछली, खुम्बी की खेती शामिल हैं। उन्होंने किसानों को पुआल जलाने की बजाए इसका उपयोग पशुओं के लिए चारे व खाद के लिए उपयोग करने की सलाह दी।